Notes

भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के सन्दर्भ में शिक्षा

Education and Globalization of Indian Economy

"वैश्वीकरण" उस विश्वव्यापी प्रवृत्ति का नाम है, जिसने पिछले कुछ वर्षों से पूरी दुनिया के जनजीवन को प्रभावित किया है। इसे भूमंडलीकरण के नाम से भी जाना जाता है वैश्वीकरण का मूल मंत्र है मुक्त बाजार। यदि बाजार की शक्तियों को खुलकर काम करने दिया जाए, उसमें सरकार का दखल और नियंत्रण न हो तो अर्थव्यवस्था का विकास होगा और अंत में सबको उस विकास का साथ मिलेगा। इस सोच के साथ हमारी शिक्षा और इलाज की सरकारी व्यवस्था को जानबूझकर उपेक्षित किया गया है और बिगाड़ा गया है ताकि इनके बाजार को बढ़ावा मिले। शिक्षा-चिकित्सा के बढ़ते निजी क्षेत्र और उसकी मँहगी सेवाओं से राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर बढ़ाने में तो मदद मिली है, किन्तु वे साधारण जनता की पहुँच से बाहर हुई हैं और उनकी लूट बढ़ गई है। नैतिक मूल्यों, भाईचारा, सामूहिकता, सादगी, ईमानदारी आदि सबको

Notes

इसकी वेदी पर बलि चढ़ाया जा रहा है, शिक्षा, चिकित्सा, मीडिया, राजनीति धर्म कला, खेल, संस्कृति सब गिरावट के शिकार हो रहे हैं। मूलत: ये पूंजीवाद की विकृतियाँ हैं, वैश्वीकरण के इस दौर ने इन विकृतियों को भयानक रूप से बढ़ाया, फैलाया तथा उग्र बनाया है,

वैश्वीकरण का अर्थ है, राष्ट्रीय घरेलू अर्थव्यवस्थाओ का विश्व अर्थ-व्यवस्था के साथ जुड़ना। इस स्थिति में वस्तुओं, कच्चा माल, पूंजी, प्रौद्योगिकी उत्पादन के साधनों आदि का बिना किसी प्रतिबंध के स्वतंत्र रूप से विभिन्न विकासशील देशो का दोहन होता है, परिणामत: किसी भी औद्योगिक ईकाई के लिये कोई भी संरक्षित घरेलू बाजार नहीं रह पाता बल्कि उसे बाजार के लिये विश्व की औद्योगिक इकाईयों के साथ प्रतियोगिता करनी पड़ती है। प्रतियोगिता का क्षेत्र पूरा विश्व होगा - यह खुला प्रतियोगिता क्षेत्र होगा। इसके दो पक्ष हैं, जिसमें प्रथम एवं महत्वपूर्ण यह है कि इस प्रतियोगिता में अविकसित और विकासशील देशो के उद्योग पिछड़ जायेंगे। इन देशो के संसाधनों एवं बाजार पर विकसित

Notes

देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार होता हुआ चला जायेगा। धरेलू उद्योग धंधे नष्ट हो जायेंगे। बेकारी बढ़ेगी और ये देश सस्ते में सस्ती दर पर श्रम शक्ति एवं प्राकृतिक भौतिक संसाधन उपलब्ध कराने वाले देश हो जायेंगे। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इनकी तकनीकी विशेषता का लाभ उठाकर अपनी शर्तों पर श्रम शक्ति एवं संसाधनों का क्रय करेंगी। इस तरह वैश्वीकरण समकालीन स्थितियों में अप्रत्यक्ष रूप में पूँजीवाद की प्रतिष्ठा की प्रक्रिया है।

वैश्वीकरण को नई सहस्राब्दी की प्रमुख विशेषता के रूप में ग्रहण किया जा रहा है। आज के विश्व समाज में यह अपरिहार्य वास्तविकता का रूप लेती जा रही है। विश्व समाज का कोई भी अंग इससे बच नहीं पा रहा है, परिणाम स्वरूप भौतिकता की ओर रुझान तेजी से बढ़ा है, वस्तुतः विश्व भौतिकता की ओर इतना आगे बढ़ गया है कि वापसी संभव नहीं है।

वैश्वीकरण सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है, जिसमें भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सीमायें सिकुड़ रही हैं।

Notes

सीमाओं को सिकुड़ने की पृष्ठभूमि है- द्रुत संप्रेषण एवं परिवहन के साधन। वैश्वीकरण आज केवल उस आर्थिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थायें वैश्विक बाजार की ओर उन्मुख हैं तथा बहुराष्ट्रीय तथा वैश्विक वित्तीय संस्थाओं द्वारा नियंत्रित है। यह वैश्वीकरण दूसरी औद्योगिक क्रांति के साथ मानव समूहों की मानसिकता को बदलकर उन्हें अपने अधीन कर रहा है। विकसित देश राइजिंग टेक्नोलॉजी से विकास कर रहे हैं एवं फ्लेट टेक्नोलॉजी पर आधारित उत्पादन को विकासशील देशों को भिजवा रहे हैं। विकासोन्मुख देश इस फ्लेट टेक्नोलॉजी पर आधारित उत्पादन को विकासशील देशो को भेजवा रहे हैं। पारंपरिक ज्ञान पर विकसित उत्पादों का अभिज्ञानित प्राकृतिक संसाधनों के अंशो को शक्तिशाली सम्पन्न देश अपने नाम से पेटेंट करा रहे हैं और पेटेंट के माध्यम से सम्पूर्ण आर्थिक लाभ के स्वयं भागीदार बन रहे हैं। यह प्रक्रिया उनके द्वारा अपनाई जा रही शोषण की नीति को उजागर करती है। इस तरह आज वैश्वीकरण कोई सैद्धान्तिक सम्प्रत्यय नहीं है, अपितु

Notes

एक चमचमाता हुआ यथार्थ है, जो मानव अस्तित्व के हर पहलू - आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव डाल रहा है।

किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि देश में पर्याप्त मात्रा में मानव संसाधन उपलब्ध हों जो प्रकृति-प्रदत्त संसाधनों का समुचित प्रयोग कर सकें। मानव संसाधन के विकास में सर्वप्रमुख स्थान शिक्षा का है। उचित शिक्षा के अभाव में विशाल जनसंख्या वाले देश भारत में भी उचित दक्षता प्राप्त मानव संसाधन की कमी महसूस की जा रही है। सरकार की ओर से समय-समय पर देश में प्राथमिक शिक्षा का स्तर बढ़ाने तथा शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु प्रयास किये जाते हैं, परन्तु कुछ कारणों से यह नहीं सफल हो पाते हैं।

हमारे देश में शिक्षा का वैश्वीकरण निम्न कारकों से प्रभावित है -

→ संस्कृति (Culture)
→ वातावरण (Environment)
→ आर्थिकी (Economy)
→ राजनैतिक (Politics)
→ समाज (Society)

Notes

वैश्वीकरण के शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आई है, जिसके कारण नई-नई शैक्षिक तकनीकियों का शिक्षा में समावेश किया जा रहा है। जहाँ पहले शिक्षा केवल व्याख्यान विधि के द्वारा निश्चित पाठ्यक्रम के आधार पर दी जाती थी, आज वहीं पर यह शिक्षा प्रोजेक्ट, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के आधार पर प्रश्नोत्तर-विधि, प्रदर्शन विधि आदि के आधार पर दी जाने लगी है, जिससे आज शिक्षा के क्षेत्र में बिना बोझे के शिक्षण, निर्मितवाद, अभिसंज्ञान-वाद आदि नये सम्प्रत्यय उभर रहे हैं।
वैश्वीकरण ने संप्रेषण तकनीकी तथा सूचना प्रौद्योगिकी जैसे माध्यमों की सहायता से संसार को वैश्विक ग्राम का रूप दे दिया है, संसार में घटित हो रही घटनाओं बढ़ रहे ज्ञान क्षेत्रों की जानकारी आज एक स्थान पर रहकर प्राप्त की जा सकती है वे हैं -

- मानवता का व्यापक स्वरूप प्रस्तुत करने में सहायक
- संस्कृति का एकीकरण करने में सहायक
- तकनीकी ज्ञान, विज्ञान का प्रचार व प्रसार
- पाठ्यचर्या का विस्तारीकरण

Notes

- व्यक्तित्व विकास में सहायक।
- शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता।
- शोध में सहायक।
- आधुनिकरण की ओर अग्रसर करने में सहायक।
- सहयोग, सहकारिता एवं साझेदारी का भाव विकसित करने में सहायक।
- एकात्मकता की ओर बढ़ने में सहायक
- नवीन पद्धतियों एवं नवाचारों से परीचित कराने में सहायक।
- शिक्षकों को विषय विशेषज्ञों के संपर्क में आने के अवसर
- विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थाओं के सम्पर्क में आने के अवसर
- समय की माँग के अनुसार शिक्षण नीतियों में बदलाव के लिए प्रेरित करना।

इस प्रकार वैश्वीकरण ने विश्व की समस्त शिक्षण समस्याओं को एक दुसरे से परीचित करा दिया है। वैश्वीकरण के कारण ही आज शिक्षण संस्थाएं एक दुसरे की इच्छाओं को अपनाने की ओर अग्रसर हो रही है जिससे शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन की अपेक्षा की जा सकती है।

Notes

वैश्वीकरण शिक्षा में पर नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने शिक्षा को विशुद्ध रूप से बाजार के अनुकूल बना दिया है। आज शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है, उसका जीवनोन्मुखी न होकर परीक्षोन्मुखी होना संस्थाओं में शिक्षा के नाम पर पाठ्यचर्या में उन्हीं चीजों को शामिल किया जा रहा है, जो उद्योगों के विस्तार और संचालन के लिए आवश्यक है।

वैश्वीकरण के शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव बिन्दुवार इस प्रकार है -

- स्कूली स्तर को परीक्षा नियंत्रित बनाने के कारण बच्चों के पास खेलने का समय नहीं रहता है।
- बोर्ड-परीक्षा, प्रतियोगिता परीक्षाओं का दबाव बच्चों के मानसिक संतुलन को बिगाड़ रहा है।
- किताबी ज्ञान पर अधिक बल देना।
- ट्यूशन, कोचिंग नए धंधे के रूप में अस्तित्व में आ गए हैं।
- कम पैसे वाले और अधिक पैसे वालों का शिक्षा स्तर में बंटवारा वैश्वीकरण की ही देन है।

Notes

- शिक्षा सृजनशीलता को बढ़ाने में असफल।
- शिक्षा को भी निजी क्षेत्र में सौंप देने से सरकार अपना जिम्मेदारी से भागना चाहती है।
- वैश्वीकरण ने शिक्षा को प्रतिस्पर्धा की मंडी बना दिया है, इसमें सहयोग सहकारिता तथा साझेदारी का अभाव है।
- वैश्वीकरण ने शिक्षा का व्यापारीकरण किया है, शिक्षा क्रय-विक्रय की वस्तु बनती जा रही है, इसे आधार में निश्चित शुल्क से अधिक धन (Capitation Fee) देकर खरीदा जा रहा है।
- असमानता की खाई बढ़ने से सामाजिक असंतुलन की विषमताएँ बढ़ रही हैं।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास होना चाहिए अर्थात् शरीर, प्राण मन, बुद्धि तथा आत्मा का विकास और समग्र विकास के लिए विद्यार्थी को हमेशा तैयार रहना चाहिए। बौद्धिक, भावात्मक तथा अध्यात्मिक इन तीन उपलब्धियों के परिणाम स्वरूप ही शिक्षा तथा जीवन के लक्ष्य तक हम पहुँच सकते हैं। महाविद्यालयों के माध्यम से सेवाकालीन

Notes

शिक्षण लघु शिक्षण के पाठ्यक्रम की व्यवस्था और शिक्षण काल में समाज सेवा की अनिवार्यता होनी चाहिए शिक्षा पर मुनाफा कमाने पर रोक लगनी चाहिए।

अतः भूमंडलीकरण के इस दौर में न तो वैश्वीकरण को पूर्णतया नकारा जा सकता है और न ही इसे स्वीकारा जा सकता है। अपनी संस्कृति व मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए वैश्वीकरण को अपनी शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश देना होगा, फिर इसकी जिम्मेदारी अध्यापकों नीति-निर्धारकों व सरकार की बनती है, अन्यथा इस शिक्षा में भारतीय शिक्षा अपने मूल स्वरूप को खो देगी और विश्व गुरु बनने की राह में पीछे रह जाएगा।